माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील

केन्द्र क्रमांक की सील

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड | 0 | 5 | 1 | परीक्षा का विषय HINDI (GENERAL)
2. परीक्षा का माध्यम ENGLISH परीक्षा की दिनांक 20-03-2019
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट **A, B, C,** या **D**) अनिवार्यतः भरें

कोड	सेट
U-2002	-

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

सरल क्रमांक **K**

4. परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	5	4	1	5	4	5	2

5. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

TWO	NINE	FIVE	FOUR	ONE	FIVE	FOUR	FIVE	TWO

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में 03 अंकों में Three

ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक 12 में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम M. S. ROY पद U.D.T.

पता / संस्था GOVT. D.A. BOYS H.S. SCHOOL No.2 KHARAGONE

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

BSEMP

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

92

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन के समय सही पाई गई है। बारकोड स्टीकर चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन किया गया है। मैंने सभी प्रश्नों के उत्तरों का गहन मूल्यांकन किया है। उत्तर पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक एक समान है एवं योग पूर्णतः सही है।

92

हस्ताक्षर (परीक्षक)

परीक्षक क्रमांक 9660628

हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक)

दिनांक

हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)

दिनांक

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

योग पूर्व पृष्ठ

हिन्दी (सामान्य)

प्रश्न क्र. 01

उत्तर 1 → (i) सूरदास कृष्ण के अनन्य भक्त हैं।

(ii) 'नर से नारायण' निबंध के लेखक गुलाबराय हैं।

(iii) बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है

(iv) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्विवेदी युग के निबंधकार थे।

(v) अर्थ के आधार पर वाक्यों के आठ भेद होते हैं।

B S E M

प्रश्न क्र. 02

उत्तर - 2

(i)

उत्तर = (घ) जब उनके घर जलमग्न हो गया

(ii)

उत्तर = (क) ईश्वर की ओर

(iii)

उत्तर = (क) उपमा

पृष्ठ अंकों का योग

(iv)

उत्तर = (ख) गोपाल सिंह नेपाली

(v)

उत्तर = (ख) कर्मधारय

प्रश्न क्र. 03

उत्तर - 3

(i)

उत्तर = सत्य

(ii)

उत्तर = सत्य

(iii)

उत्तर = असत्य

(iv)

उत्तर = असत्य

(v)

उत्तर = असत्य

BSEMP

प्रश्न क्र. 04

उत्तर-4 →

(i) यशोधरा ने बसन्त कहा है — उत्तर सिद्धार्थ को

(ii) कन्याकुमारी नाम पड़ा है — पार्वती के नाम पर

(iii) अमीरी की तुलना में गरीबी अधिक सुरक्षित है — महात्मा गाँधी

(iv) ~~अम्बु~~ अम्बुज — कमल

(v) मिसाइलें — पृथ्वी और अग्नि

प्रश्न क्र. 05

उत्तर 5

(i)

उत्तर = सितम्बर के महीने में भी वर्षा न होने के कारण पानी की कमी हो गई थी इसलिए त्राहि-त्राहि मची हुई थी।

(ii)

उत्तर = सिरचन मानू को अपने हाथों से बनाई हुई हस्तकला की वस्तुए भेंट करने स्टेशन गया था।

BSEMP

(iii)

उत्तर = बिना पानी के मोती एवं मनुष्य महत्वहीन हो जाते हैं।

(iv)

उत्तर = यशोधरा राजकुमार सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) की पत्नी थी।

(v)

उत्तर = हंसिनी ने राज-काज व राज्य की असली मालिक प्रजा को सौंपने का सुझाव दिया।

प्रश्न क्र. 06

उत्तर → यशोदा ने श्रीकृष्ण के दूत उद्धव के द्वारा देवकी को यह संदेश भेजा कि "हे देवकी! त्रिभुवन यह पूर्णतः सत्य है कि तुम ही कृष्ण की माता हो और मैं तो उसकी सिर्फ धाय हूँ।" यशोदा कहती हैं कि उन्होंने भी कृष्ण को पाला है, उनके मन में भी कृष्ण के लिए प्रेम है। इसलिए वे कहती हैं कि उन्हें कृष्ण की सारी आदतें अच्छी तरह पता है।

BSEMF

उन्हें यह पता है कि सुबह उठते श्री कृष्ण को "मारवन - रोटी" खाने की आदत है। श्री कृष्ण को यह भोजन अत्यन्त ही प्रिय है। अतः वे देवकी से श्रीकृष्ण का पूरा ध्यान रखने को कहती है और चाहती हैं कि कृष्ण वहाँ पर बिना संकोच के रहें। वे देवकी से यह भी कहती हैं कि सुबह उठने पर कृष्ण मुश्किल से नहाते हैं अतः उनकी इस आदत का भी ध्यान रखे।

यशोदा कहती है कि निः संदेह वे (देवकी) भी कृष्ण का पूरा ध्यान रखती होंगी परन्तु उन्हे भी अपने पुत्र की चिंता होती है कि वह खुश है या नही, या वह संकोच के कारण कुछ कहता भी है या नही। अतः वे कृष्ण का खास ध्यान रखें।

P.T.O.

BSEMP

प्रश्न क्र. 07

उत्तर- → ईश्वर ने हर मनुष्य को बल प्रदान किया है। हर मनुष्य के पास इतना बल है कि अगर पुरुषार्थ करके वह उस बल का सदुपयोग करे तो वह संसार का सफलतम प्राणी बन सकता है। लेखक कहते है कि बल अंधा होता है और उसकी गति पथ प्रदर्शक के अधीन होती है। अतः बल को अगर सही पथ प्रदर्शक मिले और इसका सदुपयोग हो तो सफलता हमारे कदम चूमेगी। इस संदर्भ में राम और कृष्ण का उदाहरण सर्वोत्तम है। राम और रावण, कृष्ण और कंस चारो में अथाह बल था। परन्तु राम और कृष्ण ने इस बल का सदुपयोग किया और आज श्रीराम और श्री कृष्ण के रूप में पूजे जाते है। इसके ठीक विपरीत रावण और कंस ने बल का दुरुपयोग किया और आज उनका नाम घृणा से लिया जाता है। अतः सत्य ही कहा है कि-

"सबल के बल का सदुपयोग ही सफलता की कुंजी है।"

प्रश्न क्र. 04

उत्तर-8 → दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ मानी गई है -
(i) शब्द (ii) कृति

इसमें कोई शक नही है कि शब्दो में गज़ब की ताकत है। शब्द दुनिया को बदल सकते है। शब्दो का जादू जब जब चलता है तो सबको अपने वश में कर लेता है। शब्दो के जादू से ही पराए अपने हो जाते है तो कभी अपने ही पराए हो जाते है।

परन्तु शब्दो के समान कृति भी एक अमोघ शक्ति है। कृति से मनुष्य पुरुषार्थी बनता है और स्वयं को शब्दो के फेर में न फँसा कर कृति (कर्म) की ओर अग्रसर होता है।

कस्तूरबा की निष्ठा कृति में अधिक थी। उनके अनुसार असंख्य शब्दो के रेचक भंडार की अपेक्षा वे कृति के एक कर्म को अधिक महत्व देंगी। बोलने भर से कुछ नही होता अगर सपने सच करने है तो कृति पर विश्वास करके ही आगे बढ़ा जा सकता है।

BSEMP

BSEMP

प्रश्न क्र. 09

उत्तर9 → सुभद्रा कुमारी चौहान ने कहानी 'तीन बच्चे' में तीन असहाय बच्चो का वर्णन किया है। तीन बच्चे जिनमे दो लडकियाँ जिनका नाम ईठी व सीठी था। अपने छोटे से भाई प्रेमा के साथ नाले के पास रहते थे। उन तीनों की सामाजिक व मानसिक स्थिति अत्यंत खराब थी। वे तीनो अत्यंत गरीबी व दु:खो को झेल रहे थे। उनके माता-पिता जेल में थे और वे असहाय होकर दर-दर की ठोकरे खा रहे थे। उन्हे कोई प्यार करने वाला, ध्यान रखने वाला नही था। उनके पास न पहनने को कपडे थे न खाने को खाना और न ही रहने को घर। वे तीनो गरीब भीख माँगकर अपने जीवन के कठिन क्षण किसी तरह काट रहे थे। तीनो बच्चो की उम्र अत्याधिक कम थी। उनका छोटा भाई तो सिर्फ पाँच साल का था जिसे माँ की अत्यंत आवश्यकता थी। परन्तु जीवन के आगे लाचार होकर तीनो मुश्किलों में जीवन-यापन कर रहे थे। इन तीनो की

दयनीय दशा देखकर मन करुणा से भर उठता है। और वस्तु स्थिति

प्रश्न क्र. 10

उत्तर 10 → पुस्तक नामक निबंध में लेखक श्री देवेन्द्र दीपक ने भारतीय इतिहास की अनमोल निधि नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में बताया है। उन्होंने इस विश्वविद्यालय की अनेक विशेषताएँ बताई है जो बख्तियार खिलजी के आक्रमण और आगजनी के पहले इस विश्वविद्यालय की शोभा बढ़ाया करती थी। लेखक ने बताया है कि-

(i) नालंदा विश्वविद्यालय एक विशाल विद्यालय था जहा दस हजार विद्यार्थी और पन्द्रह सौ आचार्य रहते थे।
(ii) यह विद्यालय आवासी भी था।
(iii) इस विद्यालय में सुदूर देशो जैसे - चीन, ग्रीस, सीरिया, लंका आदि से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे।
(iv) यहाँ पर विभिन्न विषयों की शिक्षा जैसे - समाज शास्त्र, दर्शनशास्त्र, धर्म, व्याकरण, हेतु विद्या, भाषा, साहित्य, ज्योतिष आदि विषयों की शिक्षा ग्रहण करते थे।

BSEMP

(v) यहाँ पर विभिन्न गुणी आचार्य जैसे नागार्जुन, शान्त्री, स्थिरमति, गुणमति, सागरमति, पतंजलि, सुश्रुत, जीवक आदि अध्यापन कार्य करते थे।

(vi) यहाँ एक विशाल पुस्तकालय था जिसे धर्मगंज कहते थे। यह पुस्तकालय विभागों में बंटा हुआ था जिसे रत्नसागर, रत्नोदधि व रत्नरंजक कहते थे।
यह भी कहा जाता है कि रत्नसागर का भवन नौ मंजिला था।

प्रश्न क्र 11

उत्तर 11 → कवि सुदर्शन ने अपनी कविता के माध्यम से भारतीयो में एक जन जागृति फैलाने का सफल प्रयास किया है। कवि कहते हैं कि हम जिस नासमझी व मूर्खता से अपनी समृद्ध संस्कृति को छोडकर पाश्चात्य संस्कृति को अपना रहे है वह हमारे लिए ही हानिकारक है।

कवि कहते हैं कि विदेशी हमारी भी भारतीय संस्कृति व उसके अंगो को चुराकर विदेश ले जा रहे रहे हैं और उसे ही नए कलेवर में लपेट कर हमे दे रहे हैं। ये विदेशी हमारी संस्कृति की चोरी हमारे सामने कर रहे हैं और हम इन्हे बस देखे जा रहे हैं। हम इनके द्वारा लाई गई हमारी ही चीजो को खुशी से अपना रहे हैं परन्तु अपने देश की चीजों की हमें कोई कद्र नही रह गई है।

हमारे ही देश का 'योग' 'योगा' बनकर हमारे सामने आता है तो हम सहर्ष उसे अपनाकर आधुनिक होने का प्रमाण देते है परन्तु जब यही "योगा" योग था तो इस पर कोई ध्यान नही दिया गया। यही हाल "सत्वज्ञान" व "वास्तु कला" का है। जो आज रेकी व फेंगशुई बनकर आज हमारे सामने है।

अतः विदेशी विदेशियों की इसी करतूत को कवि ने "उन्हें बाँस बरेली को" कहा है।

BSEMP

प्रश्न क्र. 12

उत्तर 12

द्विवेदी युग सन् 1900 से 1920 तक का माना जाता है। इस युग मे बहुत से अद्वितीय निबंधकार हुए जिन्होने राष्ट्रभाषा की सेवा की।

द्विवेदी युग के निबन्धकार निम्न है।

(i) श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी

(~~निबंध~~ → मेघ

द्विवेदी जी के दो निबंध हैं → (अ) मेघदूत

(ब) म्यूनीसिपल्टी के कारनामे

(ii) ~~सरदार~~ सरदार पूर्णसिंह

सरदार पूर्णसिंह जी के दो निबंध है –

(अ) कन्यादान

(ब) सच्ची वीरता

BSEMP

प्रश्न क्र. 13

उत्तर- 13 (अ)

(क) फूट- फूटकर रोना

अर्थ → रोकर दुःख प्रकट करना (ज्यादा दुःख प्रकट करना)

प्रयोग → रमेश के गुजर जाने पर उसकी माँ फूट- फूटकर रोई।

(ख) त्राहि- त्राहि मचना

अर्थ → चारो तरफ परेशानी के कारण हाहाकार मचना होना

प्रयोग → पानी की कमी के कारण देश में त्राहि- त्राहि मची हुई थी है।

(ब)

(ख)

उत्तर- रविवार को छुट्टी रहती है।

(ग)

उत्तर- मीरा सुन्दर लड़की है।

BSEMP

प्रश्न 15

उत्तर- 15

(अ)

(क) उपेक्षा - अपेक्षा

उपेक्षा → (ध्यान न देना अर्थ)
प्रयोग :- राजन घर में अपनी उपेक्षा से दुःखी है।

अपेक्षा ← (आशा अर्थ)
प्रयोग :- रीना को अपनी बहन से अपेक्षा है कि वह कक्षा में प्रथम आए।

(ख) सुत - सूत

सुत → पुत्र (अर्थ)
प्रयोग :- पवन-सुत हनुमान वीर थे।

सूत → धागा
प्रयोग → गाँधीजी अपने चरखे पर कपास का सूत काता करते थे।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

प्रश्न-14
(ब)
(क)
उत्तर- आप चुप रहिए।

(ख)
उत्तर- बच्चे घर की गंगाजी में कागज की नावें तैरा रहे थे और खुश हो रहे थे।

प्रश्न क्र. 15

उत्तर 15
(i) आशा से आकाश थमा है।
भाव पल्लवन :- आशा ही मनुष्य की परममित्र है। अगर मनुष्य आशावादी है तो उसका जीवन सुखद व सफल है। आशावादी मनुष्य हमेशा भला सोचते हैं और जो भी सोचते हैं उसका क्रियान्वयन भी करते हैं। मनुष्य में आशा का संचार एक नई ताकत फूंक देता है। यह हमारी आशा ही है कि आज हम सुखी रूप से जीवित हैं। अगर हम आशा नहीं करेंगे तो

L S E M P

पृष्ठ के

तो आशाओ को पूरा भी नही करेंगे इस प्रकार यह दुनिया निष्क्रिय लोगो से भर जाएगी।
अगर कोई कर्म नही होगा तो जीवन भी नही होगा। जीवन नही होगा तो हम नही होंगे और अगर हम नही होंगे तो संसार मे कोई प्रगति, विकास आदि नही होगी। इसके ठीक विपरीत अगर मनुष्य के मन में एक छोटी-सी भी आशा होगी तो वह उस आशा को पूरी करेगा (कर्म करेगा)। एक के बाद दूसरी आशा, अगले कर्म को जन्म देगी। अतः मनुष्य क्रियाशील बनेगा। यह ~~हमारी~~ मनुष्य की आशाओं का ही फल है कि यह आकाश अभी तक उसके सिर के ऊपर थमा हुआ है। ~~अब~~

अतः आशा हर मनुष्य को करनी चाहिए। जैसे अगर कोई विद्यार्थी आशावादी है कि वह परीक्षा में अच्छे अंक लाएगा तो फिर उस आशा की पूर्ति के लिए वह परिश्रम करेगा

B S E M P

और उसका परिश्रम अंत में व्यर्थ नही जाएगा। सफलता उसके कदम चूमेगी।

इसीलिए कहा है कि
आशा से आकाश थमा है।

प्रश्न क्र. 16

उत्तर - 16
गद्यांश →
विश्व के .... इंजन है।

संदर्भ :- उपरोक्त गद्यांश हमारी हिन्दी पाठ्य पुस्तक 'मकरंद' के पाठ - 11, "मेरे सपनों का भारत" से लिया गया है। इसके लेखक ~~श्री~~ डॉ. ए. पी. जे अब्दुल ~~कमा~~ कलाम है। जो कि पूर्व राष्ट्रपति है।

प्रसंग :- उपरोक्त गद्यांश में लेखक यह आशा जगाते हैं कि ~~अगर~~ इस बदलते विश्व में अगर भारत अपनी सारी क्षमताओं का पूर्ण रूप से दोहन करे तो वह निःसंदेह एक बौद्धिक शक्ति

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

बन सकता है।

व्याख्या :— इस गद्यांश में लेखक अपनी वैज्ञानिक दूरदृष्टि का प्रयोग करते हुए कहते है आज का यह युग एक बौद्धिक समाज में बदल रहा है। इस समाज की महाशक्ति बनने की पूरी संभावना व शक्ति भारत के पास है। जरूरत है तो सिर्फ इन शक्तियो, स्त्रोतो को सही रूप में ढालकर इनका पूरा उपयोग करने की। अगर भारत ने इस प्रतिस्पर्धात्मक युग की आवश्यकता को समझा और स्वयं को एक बौद्धिक रूप से विकसित राष्ट्र बनाने की प्रतिज्ञा कर ली तो अगले दो दशको में हम अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकते है। अतः भारत को इस तरह अपनी जरूरत व उद्देश्य को समझकर प्रयत्न करने चाहिए जिससे वह एक महाशक्ति बने। भारत के पास संसाधनो की कोई कमी नही है भारतीय उद्यमी हर क्षेत्र मे नित-नए

BSEMP

पृष्ठ के अंको का योग

कीर्तिमान रच रहे हैं। इन उद्यमियों की मेहनत और पूरे देश की कोशिश अगर सही दिशा में लगे तो भारत को महाशक्ति बनने से कोई नही रोक ~~सकत~~ सकता।

विशेष :- इस गद्यांश की भाषा सरल है। लेखक का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी पता चलता है।

अंत मे एक विदेशी (आगत) शब्द भी आया है जो है "इंजन"।

प्रश्न - 17

उत्तर-17

पद्य →
जैसा यह अटल .... नाता है।

संदर्भ :- उपरोक्त पंक्तियाँ हमारी हिन्दी ~~भाषी~~ पाठ्यपुस्तक के "मकरंद" के पाठ-12 "हिमालय और हम" से ली गई है जिसके लेखक श्री गोपाल सिंह "नेपाली" हैं।

P
EMP

प्रसंग :— इन पंक्तियों में कवि पर्वतराज हिमालय की विशेषताएँ बताते हुए उनका व हम भारतीयों का संबंध बताते हैं।

व्याख्या :— इन पंक्तियों में कवि गोपाल सिंह "नेपाली" जी हिमालय की विशेषताएँ बताते हैं और कहते हैं कि हिमालय पर्वत संसार में अटल, अडिग व अविचल है। वे कहते हैं कि हिमालय की ये विशेषताएँ भारतीयों में भी हैं। हिमालय जैसा विशाल पर्वत अगर धरती पर अमर है तो हम विशाल-हृदय भारतीय भी अमर ही हैं।
वे कहते हैं कि हम भारतीय भले ही अहिंसा में विश्वास रखते हैं परन्तु साथ ही साथ वीरता भी हममें कूट-कूट कर भरी हुई है। हम किसी भी प्रकार की हिंसा के आगे नहीं झुकते व डटकर हर मुसीबत का सामना करते हैं।
हमारा हृदय विशाल है और सहनशील

भी है। हमारे यहाँ की पवित्र गंगा नदी अत्यंत महत्वपूर्ण है। जो भी इसका जल एक बार भी लेता है उसके सारे पाप, सारे दुःख नष्ट हो जाते हैं और वह प्रसन्न हो जाता है। अंत में भी कवि यही कहते हैं कि पर्वतराज हिमालय से हमारा एक ऐसा ही अटूट नाता है।।

विशेष:— पंक्तियों की भाषा सरल, ओजपूर्ण व तेजस्वी है। कवि अपने उद्देश्य में सफल हुए हैं। कविता की भाषा सरल व शुद्ध है।

BSEM

पृष्ठ के अंकों का योग

P.T.O.

क

प्रश्न क्र. 18

उत्तर - 18

(क)

उत्तर= उपर्युक्त पंक्तियाँ वर्षा ऋतु के स्वागत का उत्सव मनाते वन के प्राणियों को रेखांकित करती है। कवि कहते हैं कि वर्षा ऋतु का आगमन अत्यंत सुहावना है। सारे वन- उपवन इस ऋतु में पनप गए हैं। पेड़-पौधो में नए अंकुर फूट रहे हैं। ग्रीष्म ऋतु के बाद फिर से हरे हरितिमा छा गई है। इस सुन्दर दृश्य को देखकर मयूर खुश होकर नाचता है और सारा जंगल आनन्द मनाता है। इस सुंदर छवि को नभ से बरसने को बैचेन काली घटाएं देख रही हैं।

(ख)

उत्तर= उक्त पंक्तियों में वर्षा ऋतु का सुंदर वर्णन हुआ है।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ (26)

(1)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील केन्द्राध्यक्ष 541001
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम HR. Se. Exam
7. विषय Hindi (General) 8. माध्यम English
8. दिनांक 20/03/2009

पृष्ठ (25)

परीक्षक के लिये

छात्र/छात्रा प्रवेश पत्र के निशान से मिलाकर लगायें

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	5	4	1	5	4	5	2

नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

Two	Nine	Five	Four	One	Five	Four	Five	Two

प्रश्न 18

(ग)
उत्तर= ~~लो आ गई वर्षा ऋतु~~ "वर्षा ऋतु का आगमन" इन पंक्तियों का उचित शीर्षक है।

प्रश्न 19

उत्तर-19

(क)
उत्तर= उक्त गद्यांश का उचित शीर्षक प्रजातंत्र है।

(ख)
उत्तर= क्रियान्वयन :- कार्य को मूर्त रूप में ढालना

राष्ट्रीय चरित्र :- राष्ट्र का चरित्र

कृपया P.No. 34 भी देखें। (ग) P.No. 34

26

योग पूर्व पृष्ठ

प्रश्न - 20 उत्तर
पिताजी को पत्र

स्वामी विवेकानन्द होस्टल
दिल्ली
दिनांक - 20/03/2009

आदरणीय पिताजी,

सप्रेम नमस्कार।

मैं यहाँ कुशल हूँ और आशा करता हूँ कि आप लोग भी वहां पर ~~कुशलपूर्वी~~ कुशलपूर्वक होंगे। आप मेरी चिंता बिल्कुल ना करें। पिताजी आगे समाचार यह है कि मेरी परीक्षाएँ नजदीक आ रही हैं। यह साल मेरे लिए जरूरी है क्योंकि ~~यह~~ इस साल मेरी बोर्ड की परीक्षाएँ हैं। मैं पूरे मन से परीक्षा की तैयारी में लगी ~~हुआ~~ हुई हूँ और परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही हूँ। मैंने परीक्षा के लिए सारी तैयारी कर ली है। रोज सुबह पाँच बजे से उठकर मैं पढ़ाई करती हूँ। अगर आपका व माताजी का आशीर्वाद रहा तो मैं इस साल मेरिट में आने की पूरी कोशिश करूँगी। बाकी सब कुशल मंगल है।

माताजी को मेरा प्रणाम व

BSEMP

(8) (27)

योग

प्रिय गोलू को प्यार।

दिनाँक

20/03/2019

आपकी आज्ञाकारी
पुत्री
क. ख. ग.
रोल नं. 295415458

प्रश्न क्र. 21

उत्तर निबंध

आतंकवाद

P.T.O.

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

(A) (28)

उत्तर- 21 निबंध

आतंकवाद

रूपरेखा :-

i) प्रस्तावना
ii) आतंकवाद क्या है?
iii) आतंकवाद का जन्म
iv) आतंकवाद के दुष्परिणाम
v) प्रमुख आतंकवादी घटनाएँ
vi) आतंकवाद को रोकने के उपाय
(vii) पुलिस, जनता और आतंकवाद
(viii) उपसंहार

1) प्रस्तावना :-

" बारूदों का धुआँ जहाँ पर,
रख दो मंगलदीप वहाँ पर।
निकले जब परमाणु ज्योति के,
टिक न सकेगा तिमिर वहाँ पर॥

आतंकवाद मानवता पर एक बहुत बड़ा दाग है। आतंकवाद मनुष्य को मनुष्य से दूर कर

B S E M P

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ (29)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक
6. परीक्षा का नाम Hr. Sec. Exam
7. विषय Hindi (General) 8. माध्यम English
8. दिनांक 20/03

पृष्ठ (29)

परीक्षक के लिये

स्टीकर तीर के निशान से ...

711348

परीक्षार्थी का अनुक्रमांक (अंग्रेजी अंकों में)

2	9	5	4	1	5	4	5	2

2. नीचे दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों को उसी क्रम में शब्दों में लिखा जाए :-

four	ONE	five	four	five	Two

BSEMP

उत्तर 4

उनके बीच एक कभी न पाट पाने वाली खाई खोद देता है। आज आतंकवाद एक वैश्विक समस्या बन चुका है। आतंकवाद से निपटने के लिए सारा विश्व कोशिश कर रहा है। इस आतंकवाद ने मानवता का खून चूसा है और आज यही आतंकवाद हमारे आगे चुनौती है। विश्व की महाशक्ति अमेरिका भी इससे खासी चिंतित है और विकासशील देशों की तो इसने नाक में दम कर रखा है। निर्दोष लोगों को बेमौत मारना आतंकवादियों का शगल बन गया है। आतंकवाद को रोकना आज हमारे सामने बड़ी चुनौती है और हमें मिलकर इसे रोकना होगा।

पृष्ठ के अंकों का योग

2
(i) आतंकवाद क्या है :—

आतंकवाद दो शब्दो से मिलकर बना है — आतंक + वाद।
जो लोग, दुनिया में आतंक फैलाते है उन्हे आतंकवादी कहते है।
ये आतंकवादी मनुष्य के रूप में नरभक्षी है। इन्हे किसी जाति, धर्म से कोई वास्ता नही। ये तो अपने मतलब के लिए कुछ भी कर सकते है।

मानवता पर बदनुमा दाग है आतंकवाद।
निर्दोषो की मौत है आतंकवाद।
मासूमों की चीख है आतंकवाद।
रोक दो इसे ऐ दुनियावालो
रोक दो इसे !!

(ii) आतंकवाद का जन्म : आतंकवाद

का जन्म बहुत पहले ही हो गया है। पहले भी विश्व में लोगो को डरा - धमकाकर अपना हित साधने वाले लोग रहे है। आज इसका एक नया, आधुनिक

31

और वीभत्स रूप सामने आया है। इस रूप के दर्शन से आज हर कोई त्रस्त है।

(IV) आतंकवाद के दुष्परिणाम :-

आतंकवाद आज की वैश्विक समस्या है। आतंकवाद के कारण आपसी भाईचारा, प्रेम, अहिंसा के वातावरण में दरार आई है। आतंकवाद मानव को मानव से दूर करने का काम कर रहा है। आतंकवाद के कारण कोई किसी पर विश्वास नहीं करता। हम आज के अनिश्चित युग में जी रहे हैं जिसका कोई अंत नजर नहीं आता परन्तु इसका अंत हमें खुद लाना है।

(V) प्रमुख आतंकवादी घटनाएं :-

(i) सन 2002 में भारतीय संसद भवन पर हमला।

(ii) 11 सितंबर 2001 में अमेरिका पर हमला।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

4 उ०

कुल अंक

(iii) लंदन में बम विस्फोट।

(iv) 1993 में मुंबई बम कांड।

(v) 2008 में जयपुर, दिल्ली, बेंगलोर आदि में बम धमाके।

(vi) पाकिस्तान के मैरियट होटल पर हमला।

(vii) मुंबई के ओबेरॉय, ताज होटल, व नरीमन इलाके में आतंकवादी घटना।

(viii) पाकिस्तान में श्रीलंका क्रिकेट टीम के खिलाड़ियों पर हमला।

(vi) आतंकवाद को रोकने के उपाय :-

आतंकवाद को रोकने का एक ही उपाय है कि हम सभी आपस में मिलजुलकर रहे, प्यार से रहे, ताकि कोई हमारा फायदा न उठा सके। हममे फूट डालने की कोशिशे नाकाम हो।

BSEMP

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ (33)

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सील

2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 20/3/09

3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

4. केन्द्र क्रमांक

6. परीक्षा का नाम HR Sec. Exam

7. विषय Hindi 8. माध्यम English

8. दिनांक 20/03/09

पृष्ठ (33) 83=83

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

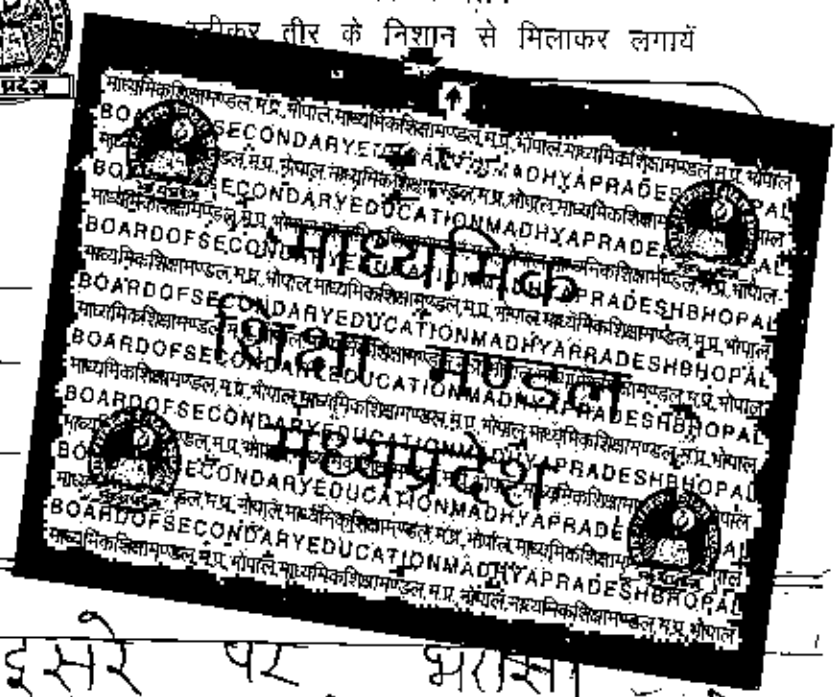

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

B
S
E
M
P

हमारा एक दूसरे पर भरोसा ही हमे आतंकवाद के नर - पिशाचो को रोकेगा।

उपसंहार :- अंत मे यही कहा जा सकता है कि आतंकवाद रूपी राक्षस को रोकना जरूरी है। हम सभी को मिलकर आतंकवाद को रोकना चाहिए क्योंकि —

यह एक ऐसा कीड़ा है जो मनुष्य में से मानवता खून पीकर बड़ा हुआ है।

हमे दुनिया को बचाना होगा और ऐसी दुनिया बनानी होगी जिसमे ~~सब~~ कुछ अच्छा हो।

के अंकों का योग

(2)
(34)

"सामाजिक उत्थार बनेंगे नैतिक नेता,
होवेंगे सुप्रसिद्ध सुधारक ग्रंथ प्रणेता,
नर नारि सेवा हर हृदय से भर लेंगे।
भारत को फिर विश्व शिरोमणि हम कर लेंगे।"

इति शुभम

उत्तर – 19

(क) प्रजातंत्र की स्थापना के लिए भारतीयो को राष्ट्रीय चरित्र को पवित्र करना चाहिए। अगर राष्ट्र को उन्नति करना है तो उसके नागरिको का राष्ट्रीय चरित्र भी उन्नत होना चाहिए। अगर किसी देश के नागरिको का चरित्र अच्छा है तो वहा नैतिकता आएगी और नैतिकता प्रजातंत्र को सफल बनाती है। भारतीयो में राष्ट्रीय चरित्र है और है इसी कारण भारत का इतना अच्छा नाम है।

BSEMP

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

...mination\A...81.pm5

(4) (2) (36)

92	+		=	92
योग -पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

मध्यप्रदेश

Ninety two only

B
S
E
M
P

ठ के अंकों का योग

ation\Ans081.pm5